खण्ड-13, अंक-1, वर्ष-2025, मु0प्र0 118-122
D.O.I.: https://doi.org/10.22445/avsp.v13i1.19
SJIF (2025) : 8.749

समीक्षा आलेख

Teachers' Understanding of the Sustainable Development Goals and Its Reflection in Their Teaching Practices: A Conceptual Analysis

Rinku Kumar
Department of Education, University of Lucknow, Lucknow-226 001, U.P., India
srivastavarinku79@gmail.com

Received: 30-10-2025, Accepted: 23-11-2025

Abstract- In today's global context, the Sustainable Development Goals are becoming an increasingly important part of the education system. These goals aim not only to impart curriculum knowledge, but also to develop sensitive, responsible, and environmentally conscious citizens who understand and fulfill their role in society. In this regard, the role of teachers is considered central, as they directly shape students' values, thinking, and behavior within the classroom. The primary objective of this conceptual research is to understand the extent to which teachers possess the Sustainable Development Goals, the depth to which they understand them, and how this understanding is reflected in their daily teaching practices. The study emphasizes that when teachers truly embrace the objectives and human significance of these goals, they are able to incorporate aspects such as environmental protection, ethical values, gender equality, social harmony, and global citizenship into their teaching. This study presents a conceptual framework that clarifies the relationship between teachers' understanding, their attitudes, and their actual classroom behavior. The findings suggest that if the Sustainable Development Goals are properly incorporated into teacher training programs, it is possible to develop students at the school level who are responsible, aware, and have a sustainable development-oriented mindset. This research thus provides useful guidance for education policymakers, teacher educators, and school administrators.

Key words- Sustainable Development Goals, teacher awareness, teaching behavior, value-based education, educational accountability

शिक्षकों में सतत् विकास लक्ष्यों के प्रति समझ और उनके शिक्षण व्यवहार में उसका प्रतिबिंब : एक वैचारिक विश्लेषण

रिंकू कुमार
शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ–226 007, उ0प्र0, भारत
srivastavarinku79@gmail.com

सार– आज की वैश्विक परिस्थितियों में सतत् विकास लक्ष्य शिक्षा व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनते जा रहे हैं। इन लक्ष्यों का उद्देश्य सिर्फ पाठ्यज्ञान देना नहीं है, बल्कि ऐसे संवेदनशील, जिम्मेदार और पर्यावरण जागरूक नागरिक तैयार करना है, जो समाज के प्रति अपनी भूमिका को समझें और निभाएँ। इस दिशा में शिक्षक की भूमिका सबसे केंद्रीय मानी जाती है, क्योंकि वही कक्षा के भीतर छात्रों के मूल्यों, सोच और व्यवहार को प्रत्यक्ष रूप से आकार देते हैं। इस संकल्पनात्मक शोध का मुख्य उद्देश यह समझना है कि शिक्षकों के पास सतत् विकास लक्ष्यों से जुड़ी कितनी जानकारी है, वे इन्हें किस गहराई तक समझते हैं और यह समझ उनके दैनिक शिक्षण व्यवहार में कैसे दिखाई देती है। अध्ययन इस बात पर जोर देता है कि जब शिक्षक इन लक्ष्यों के उद्देश्यों और मानवीय महत्त्व को वास्तविक रूप से आत्मसात कर लेते हैं, तो वे सहज ही अपने शिक्षण में पर्यावरण संरक्षण, नैतिक मूल्यों, लैंगिक समानता, सामाजिक सद्भाव और वैश्विक नागरिकता जैसे पहलुओं को शामिल कर पाते हैं। साहित्य समीक्षा से पता चलता है कि कई शिक्षक सतत् विकास लक्ष्यों को लेकर उत्साहित तो हैं, पर प्रशिक्षण, संसाधन और पाठ्यचर्या के पर्याप्त सहयोग के अभाव में वे अपनी शिक्षण प्रथाओं में इन्हें प्रभावी रूप से लागू नहीं कर पाते। यह अध्ययन एक ऐसी वैचारिक रूपरेखा प्रस्तुत करता है जो शिक्षक की समझ, उनके दृष्टिकोण और उनके वास्तविक कक्षा व्यवहार के बीच संबंध स्पष्ट करती है। निष्कर्ष बताते हैं कि यदि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सतत् विकास लक्ष्यों को उचित स्थान दिया जाए, तो विद्यालय स्तर पर ऐसे विद्यार्थियों का निर्माण संभव है, जो जिम्मेदार, जागरूक और सतत् विकास उन्मुख सोच रखते हों। इस प्रकार यह शोध शिक्षा नीति निर्माताओं, शिक्षक प्रशिक्षकों और विद्यालय प्रशासकों के लिए उपयोगी दिशा निर्देश प्रदान करता है।

बीज शब्द– सतत् विकास लक्ष्य, शिक्षक जागरूकता, शिक्षण व्यवहार, मूल्य आधारित शिक्षा, शैक्षिक उत्तरदायित्व

1. परिचय– आज के वैश्विक परिवेश में सतत् विकास मानव समाज की संतुलित, न्यायपूर्ण और दीर्घकालिक प्रगति का मूल आधार बन चुका है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित सतत् विकास लक्ष्य दुनिया के देशों को एक साझा दिशा देते हैं, जिसमें सामाजिक समानता, पर्यावरण

संरक्षण, आर्थिक स्थिरता और वैश्विक शांति जैसे व्यापक उद्देश्यों की प्राप्ति शामिल है। इन लक्ष्यों को व्यवहार में लागू करने का सबसे प्रभावी माध्यम शिक्षा मानी जाती है, क्योंकि शिक्षा ही व्यक्ति के विचारों, दृष्टिकोण, आचरण और नैतिक जिम्मेदारियों को आकार देती है। इस संदर्भ में शिक्षक सिर्फ ज्ञान प्रदान करने वाले नहीं, बल्कि मूल्यों और सामाजिक संवेदनशीलता को विकसित करने वाले प्रमुख मार्गदर्शक होते हैं। इसलिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि शिक्षक सतत् विकास लक्ष्यों को कितनी गहराई से जानते और समझते हैं और वे इन्हें अपने शिक्षण व्यवहार में किस प्रकार सम्मिलित करते हैं। जब शिक्षक इन लक्ष्यों के उद्देश्यों, सिद्धांतों और सामाजिक महत्व को वास्तविक रूप से आत्मसात कर लेते हैं, तो वे अपने शिक्षण में पर्यावरण संरक्षण, लैंगिक समानता, सामाजिक समावेशन, शांति संबंधी मूल्यों और उत्तरदायी नागरिकता जैसे तत्वों को सहज रूप से जोड़ पाते हैं। इसके विपरीत, यदि प्रशिक्षण, जागरूकता या संसाधनों की कमी हो, तो शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया समाज में अपेक्षित सकारात्मक परिवर्तन लाने की अपनी क्षमता को पूरी तरह विकसित नहीं कर पाती। इसी कारण विषय ज्ञान के साथ साथ शिक्षकों के लिए सतत् विकास उन्मुख दृष्टिकोण और व्यावहारिक कौशल का होना अत्यंत आवश्यक है। प्रस्तुत संकल्पनात्मक अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि शिक्षक सतत् विकास लक्ष्यों के प्रति कितनी जागरूकता रखते हैं और उनकी यह समझ उनके वास्तविक शिक्षण व्यवहार में कैसे प्रकट होती है। यह अध्ययन विद्यालयी शिक्षा को अधिक उत्तरदायी, मूल्य आधारित और वैश्विक अपेक्षाओं के अनुरूप बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है।

2. **अध्ययन का औचित्य–** शैक्षिक परिदृश्य में सतत् विकास लक्ष्य केवल अंतरराष्ट्रीय घोषणाएँ भर नहीं रह गए हैं, बल्कि शिक्षा प्रणाली की एक केंद्रीय जिम्मेदारी बन चुके हैं। विद्यालय स्तर पर इन लक्ष्यों को प्रभावी रूप में लागू करने में शिक्षक की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि वही विद्यार्थियों तक ज्ञान, मूल्य और सकारात्मक व्यवहार को प्रत्यक्ष रूप से पहुँचाते हैं। यदि शिक्षकों के पास सतत् विकास लक्ष्यों से संबंधित पर्याप्त समझ, जागरूकता और स्पष्ट दृष्टिकोण न हो, तो शिक्षा का प्रभाव केवल विषय ज्ञान तक सीमित रह जाता है और विद्यार्थियों में सामाजिक, नैतिक तथा पर्यावरणीय संवेदनशीलता अपेक्षित रूप से विकसित नहीं हो पाती। वर्तमान परिस्थितियाँ यह संकेत देती हैं कि कई शिक्षक इन लक्ष्यों के महत्व को समझते तो हैं, पर अपने दैनिक शिक्षण व्यवहार में उन्हें प्रभावी रूप से शामिल करने में सक्षम नहीं हो पाते। इसके पीछे शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सीमाएँ, उचित संसाधनों का अभाव तथा पाठ्यचर्या में सतत् विकास लक्ष्यों का पर्याप्त समावेशन न होना प्रमुख कारण हो सकते हैं। इन्हीं चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। यह न केवल यह स्पष्ट करता है कि सतत् विकास लक्ष्यों के प्रति शिक्षकों की अवधारणात्मक समझ उनके वास्तविक शिक्षण व्यवहार को किस प्रकार प्रभावित करती है, बल्कि यह विद्यालयी शिक्षा को अधिक उत्तरदायी, मूल्य प्रधान और सतत् विकास उन्मुख बनाने के लिए आवश्यक सुधारों एवं हस्तक्षेपों की दिशा भी सुझाता है।

3. **अध्ययन के उद्देश्य**

- शिक्षकों की सतत् विकास लक्ष्य के प्रति समझ का विश्लेषण करना।
- एस.डी.जी. आधारित शिक्षण व्यवहार का अध्ययन करना।
- एस.डी.जी. समझ और शिक्षण व्यवहार के बीच संबंध की व्याख्या करना।

4. **शोध प्रश्न**

- शिक्षकों में सतत् विकास लक्ष्यों के प्रति समझ का स्तर क्या है?
- शिक्षक अपने शिक्षण व्यवहार में सतत् विकास के मूल्यों को किस प्रकार सम्मिलित करते हैं?
- शिक्षकों की एस.डी.जी. समझ और उनके शिक्षण व्यवहार के बीच क्या संबंध है?

5. शोध विधि– प्रस्तुत अध्ययन अवधारणात्मक तथा वर्णनात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। इस शोध में किसी प्रकार का प्रत्यक्ष क्षेत्र अध्ययन या प्रायोगिक परीक्षण नहीं किया गया, बल्कि विषय से संबंधित उपलब्ध साहित्य, सिद्धांतों, नीतिगत दस्तावेजों और पूर्व शोधों के आधार पर विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

6. **संबंधित साहित्य सर्वेक्षण–** ढाका (2024)[1] ने सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में शिक्षको और उच्च शिक्षा की भूमिका पर अध्ययन किया और यह पाया की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करके असमानताओ से लड़कर, स्वास्थ्य को बढ़ावा देकर, सतत् ता को अपनाकर एक उज्जवल और अधिक निष्पक्ष भूमिका के लिए सतत् विकास लक्ष्य को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एलेना और मरीना (2024)[2] ने सतत् विकास लक्ष्यों के सम्बन्ध में भावी शिक्षको का ज्ञान, दृष्टिकोण और अभ्यास पर शोध कार्य किया और पाया कि सतत् विकास लक्ष्य से सम्बंधित भावी शिक्षकों के ज्ञान माध्यम स्तर और सकारात्मक दृष्टिकोण है इन लक्ष्यों के प्रति व्यवहारिक अनुप्रयोग में उनका प्रदर्शन थोड़ा कम है। गोमेज–गोमेज और अन्य (2023)[3] ने शिक्षक प्रशिक्षण में सतत् विकास लक्ष्यों के बारे में जागरूकता और ज्ञान बढ़ाना का

अध्ययन किया और पाया की विश्वविद्यालय शिक्षक प्रशिक्षण में एसडीजी के बारे में जागरूकता प्रशिक्षण और प्रशिक्षण और कार्यान्वयन में सुधार की आवश्यकता है पूर्व और बाद के परिक्षण ज्ञान की तुलना करने पर कुछ सुधार देखा गया है ज्ञान और शैक्षणिक वर्ष के बीच एक महत्वपूर्ण सम्बन्ध पाया गया। गार्शिया–गोजलेज और अन्य (2020)[4] ने स्थिरता के लिए शिक्षा और सतत् विकास लक्ष्य : सेवापूर्व शिक्षकों की धारणाये और ज्ञान के सन्दर्भ में अध्ययन किया और पाया की सतत् विकास लक्ष्यों का ज्ञान के सम्बन्ध में सबसे महत्वपूर्ण परवर्तन पाए गए सतत् शिक्षा के प्रति उनकी उनकी धारणाये अधिक जटिल दृष्टिकोण की ओर विकशित हुई जबकि प्रशिक्षण प्रक्रिया के अंत में प्रस्तावित पद्धति रणनीतिया प्रारंभिक रणनीतियो से भिन्न नहीं थी।

7. प्रमुख शब्दों की परिचालन परिभाषाएँ–

7.1 सतत् विकास लक्ष्य– ये वैश्विक स्तर पर निर्धारित समन्वित उद्देश्य हैं, जिनका लक्ष्य सामाजिक न्याय, आर्थिक संतुलन, पर्यावरण संरक्षण और मानव कल्याण के बीच संतुलित विकास सुनिश्चित करना है। इस अध्ययन में सतत् विकास लक्ष्यों को संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित 17 उद्देश्यों के रूप में स्वीकार किया गया है, जिन्हें विद्यालयी शिक्षा के माध्यम से व्यवहारिक रूप में विकसित किया जा सकने वाला माना गया है।

7.2 सतत् विकास लक्ष्यों की समझ– इससे आशय शिक्षक की उस बौद्धिक क्षमता से है, जिसके माध्यम से वह सतत् विकास लक्ष्यों के उद्देश्यों, घटकों, शैक्षिक महत्व और शिक्षण में उनके व्यावहारिक उपयोग को समझ पाता है। इसमें शिक्षक की अवधारणात्मक स्पष्टता, जागरूकता, सकारात्मक दृष्टिकोण तथा इन लक्ष्यों को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शामिल करने की क्षमता सम्मिलित है।

7.3 शिक्षक जागरूकता– यह शब्द उस स्तर को दर्शाता है, जिस पर शिक्षक सतत् विकास लक्ष्यों के बारे में जानकारी, संवेदनशीलता और उनके महत्त्व को पहचानते हैं। यहाँ जागरूकता का अर्थ केवल सूचना ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें शिक्षक का दृष्टिकोण संवेदनशीलता और इन लक्ष्यों के प्रति अपनाया गया व्यवहारिक रुख भी शामिल है।

7.4 शिक्षण व्यवहार– अध्ययन में शिक्षण व्यवहार से तात्पर्य उन पद्धतियों, गतिविधियों, रणनीतियों और मूल्य आधारित दृष्टिकोण से है, जिनका शिक्षक कक्षा में उपयोग करते हैं। इन्हीं माध्यमों से शिक्षक सतत् विकास लक्ष्यों से जुड़े विचारों, मूल्यों और अपेक्षित व्यवहार को विद्यार्थियों तक पहुँचाते हैं और कक्षा परिवेश में उन्हें वास्तविक रूप से लागू करते हैं।

7.5 मूल्य आधारित शिक्षा– यह वह शिक्षण प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत शिक्षक नैतिकता, संवेदनशीलता, समानता, उत्तरदायित्व और पर्यावरण अनुकूल दृष्टिकोण जैसे मूल्यों को शिक्षण अधिगम अनुभवों में सम्मिलित करते हैं। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों में समाजोपयोगी, जिम्मेदार और सकारात्मक व्यवहार विकसित करना है।

8. सतत् विकास लक्ष्य (एस.डी.जी.)– सतत् विकास लक्ष्य, जिन्हें संक्षेप में एस.डी.जी. कहा जाता है, संयुक्त राष्ट्र द्वारा वर्ष 2015 में निर्धारित 17 वैश्विक लक्ष्यों का एक व्यापक और सर्वसमावेशी ढाँचा हैं। इन लक्ष्यों का उद्देश्य विश्व को सामाजिक रूप से अधिक न्यायपूर्ण, आर्थिक रूप से संतुलित और पर्यावरणीय दृष्टि से सुरक्षित बनाना है। एस.डी.जी. का मूल विचार यह है कि विकास केवल वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करने तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के संसाधनों और जीवन स्तर को सुरक्षित रखते हुए होना चाहिए। इन लक्ष्यों में गरीबी उन्मूलन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, लैंगिक समानता, स्वच्छ जल और स्वच्छता, स्वच्छ ऊर्जा, सम्मानजनक कार्य, असमानताओं में कमी, जलवायु परिवर्तन का समाधान, शांति और न्याय, तथा वैश्विक साझेदारी जैसे महत्वपूर्ण आयाम शामिल हैं- जो आधुनिक समाज के समग्र विकास के लिए अनिवार्य माने जाते हैं। एस.डी.जी. केवल अंतरराष्ट्रीय नीतियों या औपचारिक कार्यक्रमों तक सीमित नहीं हैं, इनका प्रभाव शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक नीति, संसाधन प्रबंधन और सामाजिक ढाँचे के हर स्तर पर देखा जा सकता है। विशेष रूप से शिक्षा को इन लक्ष्यों की प्राप्ति का सबसे शक्तिशाली माध्यम माना गया है, क्योंकि शिक्षा ही जिम्मेदार, संवेदनशील, पर्यावरण जागरूक और नैतिक मूल्यों से युक्त नागरिकों का निर्माण करती है। विद्यालयी शिक्षा के माध्यम से सहयोग, समानता, पर्यावरण संरक्षण, जिम्मेदार उपभोग, वैश्विक नागरिकता और शांति जैसे एस.डी.जी. आधारित मूल्यों को प्रभावी रूप से विद्यार्थियों में विकसित किया जा सकता है। सतत् विकास लक्ष्य यह भी स्पष्ट करते हैं कि विकास का अर्थ केवल आर्थिक वृद्धि नहीं है। वास्तविक विकास तभी सार्थक है जब समाज के सभी लोगों को समान अवसर, सुरक्षित पर्यावरण और गुणवत्तापूर्ण जीवन उपलब्ध हो। इसी दृष्टि से एस.डी.जी. आज आधुनिक विश्व के विकास का मार्गदर्शक ढाँचा बन चुके हैं, जो राष्ट्रों, समुदायों, विद्यालयों और शिक्षकों को एक साझा दिशा प्रदान करते हैं– एक ऐसे समाज की ओर, जो स्थायी, समतामूलक और मानव केंद्रित हो।

9. **एस.डी.जी. 4 गुणवत्तापूर्ण शिक्षा–** सतत् विकास लक्ष्य 4 का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रत्येक बच्चा, युवा और वयस्क समावेशी, समान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर सके तथा जीवनपर्यंत सीखने के अवसर पा सके। यह लक्ष्य इस विचार पर आधारित है कि शिक्षा केवल सामाजिक और आर्थिक प्रगति का साधन नहीं है, बल्कि व्यक्तित्व विकास, सामाजिक न्याय, पर्यावरणीय उत्तरदायित्व और वैश्विक नागरिकता की भावना को भी मजबूत करती है। एस.डी.जी. 4 यह अपेक्षा करता है कि शिक्षा केवल ज्ञान तक

सीमित न रहे, बल्कि विद्यार्थियों में कौशल, मूल्य, जीवन योग्यताएँ, समस्या समाधान क्षमता और सहयोगात्मक व्यवहार को भी विकसित करे। इस लक्ष्य के तहत विद्यालयों में प्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता, सुरक्षित और अनुकूल शिक्षण वातावरण, समावेशी शिक्षा, तकनीकी और व्यावसायिक कौशलों का विकास, समान अवसर तथा वंचित समूहों के लिए विशेष सहायता जैसी व्यवस्थाओं को अत्यावश्यक माना गया है। यह लक्ष्य शिक्षा प्रणाली को अधिक न्यायसंगत, लचीला और भविष्य केंद्रित बनाने की दिशा प्रदान करता है। एस.डी.जी. 4 का सार यह है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी केवल ज्ञानवान ही न बनें, बल्कि उत्तरदायी, संवेदनशील और सतत् विकास के मूल्यों से संपन्न नागरिक भी बनें जो अंततः समाज और विश्व के संतुलित एवं स्थायी विकास में सक्रिय योगदान दे सकें।

10. **एस.डी.जी. 4 और शिक्षण व्यवहार—** सतत् विकास लक्ष्य 4 का मूल केंद्र सभी को समावेशी, समान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है। इस लक्ष्य को वास्तविक रूप में लागू करने में शिक्षक का शिक्षण व्यवहार सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केवल पाठ्य सामग्री के प्रसारण पर निर्भर नहीं होती, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करती है कि शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया में किन पद्धतियों, गतिविधियों, मूल्यों और संवाद शैली का उपयोग करता है। एस.डी.जी. 4 शिक्षण व्यवहार को मूल्य आधारित, कौशल उन्मुख, सहयोगात्मक और जीवन केंद्रित बनाने की दिशा में बल देता है, ताकि शिक्षा केवल जानकारी प्रदान करने की प्रक्रिया न रहकर व्यवहारिक कौशल और जिम्मेदार नागरिकता के विकास का माध्यम बन सके। एस.डी.जी. 4 के अनुरूप शिक्षण व्यवहार में शिक्षक विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं और क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए समावेशी पद्धतियों का प्रयोग करता है। इसमें गतिविधि आधारित शिक्षण, परियोजना आधारित अधिगम, समस्या समाधान, आलोचनात्मक चिंतन और समूह सहयोग जैसी प्रक्रियाएँ प्रमुख स्थान रखती हैं। इसके साथ ही शिक्षण में समान अवसर, लैंगिक संवेदनशीलता, पर्यावरण जागरूकता और सामाजिक न्याय जैसे मूल्यों का समावेश आवश्यक माना जाता है। इस प्रकार शिक्षक का शिक्षण व्यवहार ही एस.डी.जी. 4 का वास्तविक क्रियान्वयन है, क्योंकि उसी के माध्यम से विद्यार्थी ज्ञान के साथ साथ संवेदनशीलता, उत्तरदायित्व, कौशल और जीवन उन्मुख दृष्टिकोण विकसित करते हैं। इसलिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए शिक्षकों का जागरूक, आधुनिक, समावेशी और सतत् विकास आधारित शिक्षण व्यवहार अत्यंत आवश्यक है।

11. एस.डी.जी. 4 का भारत में कार्यान्वयन— भारत में सतत् विकास लक्ष्य 4 के क्रियान्वयन को शिक्षा से संबंधित नीतियों, योजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से लगातार मजबूत किया जा रहा है। गुणवत्तापूर्ण, समावेशी और समान शिक्षा को राष्ट्रीय प्राथमिकता मानते हुए भारत ने विद्यालयी स्तर से लेकर उच्च शिक्षा तक अनेक सुधारात्मक पहलें प्रारंभ की हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण कदम माना जाता है, क्योंकि यह शिक्षा को मूल्य आधारित, कौशल उन्मुख, लचीला, समावेशी और बहुविषयक बनाने पर विशेष बल देती है। इसके अंतर्गत मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा, समग्र मूल्यांकन, कौशल एवं व्यावसायिक शिक्षा, डिजिटल अधिगम, तथा शिक्षक प्रशिक्षण जैसे क्षेत्रों को प्राथमिकता दी गई है। भारत सरकार "समग्र शिक्षा अभियान" के माध्यम से विद्यालयों में आधारभूत ढाँचे, तकनीकी सुविधाओं, छात्रवृत्तियों, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के समर्थन और शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को सुदृढ़ करने के दिशा में कार्य कर रही है। इसी तरह राष्ट्रीय डिजिटल शिक्षा पहलों—जैसे "स्वयं पोर्टल", "दीक्षा प्लेटफॉर्म" और "विद्या प्रवेश" ने शिक्षा की उपलब्धता, गुणवत्ता और समानता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। एस.डी.जी. 4 की प्राप्ति में शिक्षक प्रशिक्षण को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है, इसलिए राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर विभिन्न संस्थान शिक्षकों में आधुनिक शिक्षण पद्धतियों, मूल्यों और आवश्यक कौशलों का विकास कर रहे हैं। यद्यपि भारत में सामाजिक आर्थिक विषमता, शैक्षणिक संसाधनों की कमी और क्षेत्रीय असमानताओं जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं, फिर भी नीतिगत सुधारों, डिजिटल पहलों और समावेशी कार्यक्रमों के माध्यम से देश सतत् विकास लक्ष्य 4 की दिशा में निरंतर प्रगति कर रहा है।

12. **एस.डी.जी. 4 के संदर्भ में शिक्षक प्रशिक्षण—** सतत् विकास लक्ष्य 4 गुणवत्तापूर्ण, समावेशी और समान शिक्षा के विस्तार पर बल देता है, और इस उद्देश्य की प्राप्ति में शिक्षक प्रशिक्षण की भूमिका अत्यंत केंद्रीय है। शिक्षक प्रशिक्षण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से शिक्षक न केवल विषय ज्ञान प्राप्त करते हैं, बल्कि मूल्य आधारित सोच, समावेशी दृष्टिकोण, कौशल आधारित शिक्षण और सतत् विकास से संबंधित व्यवहारिक दक्षताएँ भी विकसित करते हैं। एस.डी.जी. 4 के अनुरूप शिक्षक प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य ऐसे शिक्षकों का निर्माण करना है जो विद्यार्थियों में आलोचनात्मक सोच, सहयोग, समस्या समाधान क्षमता, पर्यावरणीय उत्तरदायित्व और वैश्विक नागरिकता जैसे आवश्यक गुणों का विकास कर सकें। भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षक प्रशिक्षण को आधुनिक, लचीला और बहुआयामी बनाने की स्पष्ट दिशा प्रदान की है। इस नीति के अंतर्गत शिक्षक शिक्षा को चार वर्षीय समग्र पाठयक्रम, अनुभवात्मक अधिगम, डिजिटल प्रशिक्षण और विद्यालय केंद्रित व्यावहारिक अनुभवों से जोड़ने पर जोर दिया गया है। "समग्र शिक्षा अभियान", "एनसीटीई मॉडल पाठ्यक्रम" और डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसे "दीक्षा" के माध्यम से शिक्षकों को निरंतर व्यावसायिक विकास के अवसर प्रदान किए जा रहे हैं। एस.डी.जी. 4 के संदर्भ में शिक्षक प्रशिक्षण का एक महत्वपूर्ण आयाम यह भी है कि शिक्षक समानता, पर्यावरण संरक्षण, जीवन कौशल, सामाजिक न्याय और जिम्मेदार नागरिकता जैसे सतत् विकास से जुड़े मूल्यों को अपने दैनिक शिक्षण व्यवहार में शामिल करें। इसी उद्देश्य से प्रशिक्षण कार्यक्रमों में पर्यावरण शिक्षा, गतिविधि आधारित अधिगम, समावेशी कक्षा प्रबंधन, मूल्य शिक्षा और स्थानीय संदर्भों से संबद्ध शिक्षण सामग्री को सम्मिलित किया जा रहा है। स्पष्ट है कि मजबूत, आधुनिक और सतत् विकास उन्मुख शिक्षक प्रशिक्षण के बिना एस.डी.जी. 4 की पूर्ण प्राप्ति संभव नहीं

है। शिक्षक ही वे वास्तविक परिवर्तनकारी माध्यम हैं, जो इस लक्ष्य को कक्षा स्तर पर प्रभावी रूप में लागू कर सकते हैं।

13. **एस.डी.जी. समझ और शिक्षण व्यवहार के बीच संबंध–** सतत् विकास लक्ष्यों की समझ और शिक्षक के शिक्षण व्यवहार के बीच एक गहरा और प्रत्यक्ष संबंध पाया जाता है। जब शिक्षक सतत् विकास लक्ष्यों–जैसे पर्यावरण संरक्षण, समावेशिता, सामाजिक समानता, वैश्विक नागरिकता और उत्तरदायी जीवन शैली को गहराई से समझते हैं, तो वे स्वाभाविक रूप से इन मूल्यों को अपनी कक्षा की गतिविधियों, उदाहरणों, शिक्षण पद्धतियों और दैनिक व्यवहार में शामिल करने लगते हैं। शिक्षक की समझ जितनी व्यापक और स्पष्ट होती है, उनका शिक्षण व्यवहार उतना ही अधिक मूल्य आधारित, गतिविधि उन्मुख, समस्या समाधान केंद्रित और संवेदनशील दृष्टिकोण वाला बनता जाता है। इसके विपरीत, यदि शिक्षक की एस.डी.जी. संबंधी समझ सीमित या सतही होती है, तो उनके शिक्षण व्यवहार में स्थिरता आधारित तत्वों का समावेश कम हो जाता है और वे अक्सर पारंपरिक तथा रटंत आधारित पद्धतियों तक ही सीमित रह जाते हैं। विभिन्न शोध यह संकेत देते हैं कि एस.डी.जी. की स्पष्ट समझ शिक्षकों में सकारात्मक दृष्टिकोण, पर्यावरणीय उत्तरदायित्व और सामाजिक न्याय के प्रति संवेदनशीलता विकसित करती है, जो सीधे उनके शिक्षण व्यवहार पर प्रभाव डालती है। अतः यह कहा जा सकता है कि सतत् विकास लक्ष्यों की गहरी समझ शिक्षक के शिक्षण व्यवहार को रूपांतरित करती है और शिक्षा को अधिक गुणवत्तापूर्ण, समावेशी तथा स्थिरता उन्मुख बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

14. **निष्कर्ष–** सतत् विकास लक्ष्य आज की शिक्षा प्रणाली का एक आवश्यक और अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं। कक्षा स्तर पर इन लक्ष्यों के प्रभावी क्रियान्वयन में शिक्षक की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि वही विद्यार्थियों के विचारों, मूल्यों और सामाजिक व्यवहार को प्रत्यक्ष रूप से आकार देते हैं। अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि जब शिक्षक सतत् विकास लक्ष्यों की गहन समझ रखते हैं और उनके सामाजिक महत्व को महसूस करते हैं, तो वे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में पर्यावरणीय चेतना, समानता, न्याय, शांति, सहयोग और वैश्विक नागरिकता जैसे मूल्यों को सहज रूप से शामिल कर पाते हैं। साथ ही, यदि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सतत् विकास लक्ष्यों पर आधारित मॉड्यूल जोड़े जाएँ, विद्यालयी नीतियों में स्पष्ट दिशा निर्देश उपलब्ध हों और उपयुक्त शिक्षण सामग्री प्रदान की जाए, तो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा अर्थात् एस.डी.जी. 4 की प्राप्ति और अधिक प्रभावी रूप से संभव हो सकेगी। इस वैचारिक अध्ययन का मुख्य निष्कर्ष यह है कि सतत् विकास लक्ष्यों के प्रति शिक्षक की अवधारणात्मक समझ ही उसके शिक्षण व्यवहार को दिशा देती है। जब शिक्षक इन लक्ष्यों को समझते, अपनाते और अपने व्यवहार में लागू करते हैं, तब शिक्षा वास्तव में समाज को स्थायी विकास, न्याय, समानता और नैतिकता की ओर अग्रसर करने का सशक्त माध्यम बन जाती है।

References

1. Dhaka, R. (2024). Role of teachers and higher Education achieving the Sustainable Development Goals. International Journal for multidisciplinary Research. 6(1). E-ISSN:2582-2160. http://doi.org/10.36948/ijfmr.2024.v06i01.11792
2. Alena, L. & Marina D. (2024). Future Teacher's knowledge attitudes and practice regarding Sustainable new Development Goals. Education and Development 2024. 31-35. https://doi.org/10.36315/2024v/end007
3. Gomez-Gomez M. & Garia-Lazaro, D. (2023). Awareness and Knowledge of the Sustainable Development Goals in teacher training. 27(3). ISSN:1138-414X, 243-264. http://orcid.org/0000-003-3253-6822
4. Garicia-Gazale, E., Jimenez-Fontana, R. &Azcarate, R. (2020). Education for Sustainability and Sustainable Development Goals: Pre-Service Teacher's Perceptions and Knowledge. Sustainability 12(18). Faculty of Education, Universidad de Cadiz Puerto Road, 11519, Spain. http://doi.org/103390/su12187741
5. https://www.orfonline.org/hindi/expert-speak/sdg-4-quality-education-and-its-significance-in-the-developing-world
6. United Nations. (2020). The sustainable development goals report 2020. United Nations Publications.
7. https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-analysis/niti-aayog-sdg-india-index-2023-24.